[Dr. Subramaniam Swamy]

Recently a JNU professor objected to the *locus standi* of Shri Morarji Desai enquiring into malpractices during the emergency in Universities This should have been welcomed because of Morarji Bhai's moral stature and also he has long experience as Chancellor of Gujarat Vidyapith.

Now, Sir, what these professors really object to is that having padded their nests by their disgraceful collaboration with the previous dictatorial regime, they are to face an exposure of their own lack of academic standing. This has obviously made them insecure. They can no more assume that they can live comfortable luxurious lives without fear of accountability.

Sir, the cry of autonomy of Universities should not be a cover for unlimited freedom to run Universities as mini-kingdoms for a few feudal-lords posing as academicians

However, having said this, I would also like to draw the Prime Minister's attention through you to the fact that a proper enquiry of the Universities is being impeded by the control of information flowing to him. This control is being exercised by an unholy alliance of discredited University professors and the corrupt administrators both in the Universities and in the Education Ministry

I would like to give you an illustration. The Prime Minister enquired into the matter regarding the I.I.T., Delhi and all the people who are supplying him the files from the Education Ministry are people who have their sons and daughters studying in the IIT and whose admission, was made available by very dubious means

Sir, this clearly shows that because of this kind of collaboration interests and conflict of interest, it is not possible for the Prime Minister to get a proper, uninterrupted and unadulterated flow of all information.

Therefore, Sir, a proper enquiry by the Prime Minister of these Universities must be preceded by a purge or a major re-shuffle of University administrators both in the Universities and in the Ministry of Education.

(iv) REPORTED DAMAGE TO CROPS DUE TO RECENT HEAVY HAILSTORMS IN DIFFERENT PARTS OF THE COUNTRY

श्री बलीराम बागड़ी (मथुरा) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं जिस जगह से यहां आ रहा हूं वह स्थान मथुरा भारत में किसानों का प्रतीक है । वहा गोपाल कृष्ण हलधर थे । असल में भारत किसानों का देश है । जब किसानों पर आपत्ति आई, तो राजा जनक ते हल चलाया । भगवान कृष्ण गोपाल-हलधर- ने भी न सिर्फ़ हल चलाया, बल्कि गउयें चराई और गोवर्द्धन को उठा कर उस क्षेत्र को बाढ से बचाया । उस के बाद समय समय पर महात्मा गाधी, डा० लोहिया, श्री जयप्रकाश नारायण और आज के राष्ट्रपति किसानो के लिए संघर्ष करते रहे है । किसान समस्त भारत का प्रतीक है । लेकिन वह कितना अभागा है कि हालाकि जनता पार्टी और विपक्ष दोनों ही किसानो की शक्ति के बल पर यहा बैठते है, लेकिन किसानों के दर्द की बात यहा नही उठाई जाती है । अगर किसानो के दर्द की कोई बात यहां उठाने की कोशिश की जाती है, या उठाई जाती है, तो जो लोग किसानो की शक्ति के द्वारा यहा आये है, वे कहते हैं कि किसानों की बात यहा न उठाई जाये ।

जब जनता पार्टी का शासन आया, तो इस देश में एक बहुत बड़ी क्रान्ति हुई, एक तानाशाह खत्म हुआ और जनतंत्र का जन्म हुआ । लेकिन दुर्भाग्य से इन्द्र का कोप हुआ और देश में बाढ की विपत्ति आई । शासन ने इस बारे में बहुत काम किया, जिस से लोगों को कुछ राहत मिली, लेकिन जितना काम करना चाहिए, उतना नही हुआ । इस के बाद

किसानों के लिए गन्ने, कपास, सरसों और गुड़ वगैरह के भाव की समस्या पैदा हुई । अब ओलाबृष्टि से, जिसे उर्दू में ज़ालाबारी कहते हैं, किसानों की समस्त फ़सल ख़राब हो गई है ।

कृषि मंत्री खुद किसान हैं और किसानों के प्रतिनिधि हैं । यह सदन भी किसानों का प्रतिनिधि है । अच्छा होता कि इस सवाल पर यहां बहस की जाती । अगर ऐसा होता, तो हिन्दुस्तान के किसानों के दर्द के लिए वह एक फाहे का काम देती और किसान यह महसूस करते कि यह सदन हमारे ग़म में शरीक है और वह हमारे दर्द पर सहानुभूति से विचार कर रहा है । कम से कम यह भावना तो होती कि ज़ालाबारी या ओला-वर्षा से किसानों का जो नुक्सान हुआ है, उस के लिए कुछ मुआवज़ा दिया जाये । हम उन्हें बीमे की कोई सहूलियत नहीं दे सके हैं, जबकि कारों वगैरह के लिए, और कारख़ानेदारों को, यह सुविधा मिली हुई है ।

किसान बेचारे अनपढ़ हैं । लेकिन गांधी जी के सपनों के मुताबिक और डा० लोहिया के शब्दों में कभी वह दिन आयेगा, जब भारत का किसान उठेगा और अपनी किस्मत का फ़ैसला खुद करने के काबिल होगा, और तब इस सदन के माननीय सदस्य भी भाग भाग कर उस का काम करेंगे । अच्छा होता कि कृषि मंत्री कम से कम यह ऐलान तो करते कि किसानों को ज़ाला बारी या ओला-वृष्टि से जो नुक्सान हुआ है, उस का मुआवज़ा दिया जायेगा ।

हमारे विरोधी भाई बोलने में कम नहीं हैं । मुझे खुशी है कि वे बोलते तो बहुत हैं । लेकिन वे कभी एक मेम्बर की, और कभी दूसरे मेम्बर की, जूठी थाली उठा कर भागते हैं, और उसी में खाना शुरू कर देते हैं । लेकिन वह बुनियादी सवालों —किसानों, मज़दूरों और ग़रीबों के सवालों—को नहीं लेते हैं । अगर इस हाऊस में बुनियादी सवालों को लिया जायेगा, तभी देश और लोकतंत्र मज़बूत होगा । अगर विरोधी लोग बुनियादी सवालों को उठायें, तो मुझे खुशी होगी, जैसा कि हम लोग उठाया करते थे । लेकिन दूसरों के सवालों को उठाना, किसी के गीत गाना और किसी की टांग खींचना ठीक नहीं है ।

मैं कृषि मंत्री से बड़े पुरज़ोर शब्दों में अनुरोध करूंगा कि वह कानून की दलदल में न फसें । वह बाबा नानक के अनुयायी हैं, जिन्होंने बुढ़ापे में हल चलाया था—हालांकि यह नहीं कि रोटी की कमी थी, वह तो सारे संसार का दाता था । कानून इजाज़त दे या नहीं, लेकिन उन्हें कम से कम इस सदन के ज़रिये सारे भारत के किसानों को विश्वास दिलाना चाहिए कि ज़ालाबारी से जो नुक्सान हुआ है, सरकार उस की क्षतिपूर्ति करेगी ।

उपाध्यक्ष महोदय, आप डा० लोहिया के शिष्य रहे हैं । आप शेरों के नीचे बैठे हुए हैं । आप शेरों से दबने की बात न करें, बल्कि उन के पंजों को पकड़ कर शेरों की बात करें और बरनाला साहब को आदेश दें कि वह इस बारे में कुछ कहें ।

---

15. 25 hrs.

*DEMANDS FOR GRANTS (RAILWAYS), 1978-79

MR. DEPUTY-SPEAKER: The House will now take up discussion and voting on the Demands for Grants in respect of the Budget (Railways) for 1978-79 for which 3 hours have been allotted.

Hon. Members whose cut motions to the Demands for Grants have been circulated, may if they desire to move

*Moved with the recommendation of the President.